# विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

**तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र**

विज्ञप्ति ( साप्ताहिक ) : वर्ष 24 : अंक 24 : नई दिल्ली : 7-13 सितम्बर 2018


परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण-श्रमणीवृंद चेन्नई में सानंद चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। पर्युषण पर्वाधिराज प्रारम्भ हो चुका है। चतुर्मास स्थल परिसर में धार्मिक ठाठ लगा हुआ है। हजारों श्रद्धालु पर्युषण के नवाह्निक कार्यक्रमों में सोत्साह संभागी बने हुए हैं। तपस्या की तो मानों झड़ी-सी लगी हुई है। अब तक चेन्नई में पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में लगभग २० मासखमण तप सम्पन्न हो चुके हैं। अनेक लोग अब भी तपस्या के क्षेत्र में प्रगतिशील हैं। संवत्सरी के उपरान्त पूज्यप्रवर की मंगल सन्निधि में १८ सितम्बर को विकास महोत्सव और २२ सितम्बर को भिक्षु चरमोत्सव का आयोजन होगा। पर्युषण के पश्चात् देश के विभिन्न क्षेत्रों से हजारों लोग संघबद्ध रूप में पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचेंगे, ऐसी सूचना प्राप्त हो रही है।

## परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण चेन्नई में

### आगमज्ञान में नियोजित करें अपनी प्रज्ञा

**३० अगस्त।** परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन शृंखला को आगे बढ़ाते हुए कहा--'ज्ञान अपने आप में अनंत है। वह विभिन्न प्रकार का होता है। भूगोल, खगोल, सामाजिक ज्ञान, विज्ञान आदि लौकिक विषयों का भी ज्ञान होता है। अध्यात्म विद्या भी ज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण विषय है। अनेक धर्म हैं। भारत देश में भी कितने-कितने आम्नाय हैं। संप्रदायों के अपने-अपने ग्रन्थ भी होते हैं।

जब सर्वज्ञ होते हैं, तब ग्रंथों का इतना महत्त्व नहीं होता, उस समय तो सर्वज्ञ ही प्रमाण होते हैं, किन्तु जिस समय सर्वज्ञ या विशिष्ट ज्ञानी नहीं होते हैं, उस समय ग्रंथों का भी महत्त्व हो जाता है, ग्रंथ में वर्णित निर्देशों, आदेशों के आधार पर कार्य किया जाता है। जैन शासन के भी अपने ग्रंथ हैं। आज सर्वज्ञ तो कोई दिखाई नहीं दे रहा है और कोई अति विशिष्ट ज्ञानी पुरुष भी उपलब्ध नहीं है, ऐसे समय में हमारे लिए ग्रंथ बहुत बड़े आधार बनते हैं। हमारे यहां आगम ग्रंथों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनमें बारह अंग हैं। उनका बहुत महत्त्व है। वर्तमान में हमें बारह अंगों में से ग्यारह ही उपलब्ध हैं। बारहवां अंग दृष्टिवाद वर्तमान में उपलब्ध नहीं है।

हुआ यूं कि भगवान महावीर जब विराजमान थे, तब तो वे स्वयं सर्वज्ञ थे तथा और भी मुनि केवलज्ञानी थे। जम्बू स्वामी अंतिम केवली हुए। उनके साथ ही केवलज्ञान नहीं रहा। जम्बू स्वामी मोक्ष में गए, उसके बाद कोई मोक्ष में नहीं जा पा रहा है। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद दूसरी शताब्दी में बारह वर्षों दुर्भिक्ष पड़ा। उस समय साधुओं को भिक्षा मिलनी भी मुश्किल हो गई। उस समय कई श्रुतधर मुनि कालकवलित हो गए। पीछे जो साधु रहे, उनमें से किसी को अंगों का कोई भाग याद था, किसी को दूसरा कोई भाग याद था, इस प्रकार आसपास रहने वाले साधुओं में किसी एक के पास सारा ज्ञान नहीं था। उस समय साधु लोग मिले और संघ के अग्रणी मुनियों ने सबका ज्ञान संकलित कर अंगों को सुव्यवस्थित करने का प्रयास किया। बारहवां अंग है--दृष्टिवाद। उसके परिकर्म, सूत्र आदि पांच भाग हैं। दृष्टिवाद का ज्ञान उन

साधुओं में से किसी को नहीं था तो चिंतन किया गया कि उसका ज्ञान कैसे प्राप्त किया जाए? किसी के पास उसका ज्ञान है अथवा नहीं? ध्यान में आया कि एक व्यक्तित्व आज भी विद्यमान हैं, जो पूर्वों के ज्ञाता हैं। दृष्टिवाद का ही एक भाग है--पूर्वगत, जिसके अंतर्गत चौदह पूर्व हैं। भद्रबाहु स्वामी का नाम पूर्वों के ज्ञाता के रूप में ज्ञात हुआ। बताया गया है कि दृष्टिवाद को ग्रहण करने में सोलह वर्ष का समय लगता है और उस ज्ञान के परावर्तन में बारह वर्ष लगते हैं। हालांकि बारह वर्ष अल्पमति को लगते हैं, कोई अच्छा प्राज्ञ हो तो एक वर्ष में भी ज्ञान का परावर्तन कर सकता है। चतुर्दशपूर्वी मुनि तो श्रुतज्ञान के मानों भंडार होते हैं। वे तीर्थंकर तो नहीं होते, किन्तु तीर्थंकर के समान होते हैं। वे तीर्थंकर की तरह आवितथ व्याकरण करने वाले होते हैं। उस समय ऐसे व्यक्तित्व एकमात्र भद्रबाहु स्वामी बचे थे।

संघ ने सोचा कि एक महान व्यक्तित्व दुनिया में मौजूद हैं। वे जब तक हैं, तब तक उनसे ज्ञान प्राप्त कर लिया जाए। भद्रबाहु स्वामी उस समय नेपाल में थे। संघ ने भद्रबाहु स्वामी से ज्ञानदान के निवेदन के साथ दो साधुओं को नेपाल भेजा। वे साधु भद्रबाहु स्वामी के पास पहुंचे और उनके दर्शन कर निवेदन किया कि संघ ने मिलकर आपसे यह प्रार्थना की है कि आपके पास ज्ञान का भण्डार है। आप अध्यापन के द्वारा वह ज्ञानराशि संघ को प्रदान करें। भद्रबाहु स्वामी ने कहा--'मैं नेपाल में महाप्राण ध्यान की साधना के लक्ष्य से स्थित हूं। दुर्भिक्ष के कारण मैं उस साधना में प्रविष्ट नहीं हो पाया। अब मैंने उसकी साधना प्रारम्भ की है, अतः मैं वाचना देने के लिए आने में असमर्थ हूं।' दोनों साधु पुनः पाटलिपुत्र में संघ के पास पहुंचे और भद्रबाहु स्वामी से हुई बात की जानकारी दी।

संघ ने सोचा कि वे ज्ञान नहीं देंगे तो उनके बाद ज्ञान का लोप ही हो जाएगा। इसलिए उनसे ज्ञान लेना तो जरूरी है। संघ ने पुनः निवेदन के साथ दो साधुओं को भेजा। वे साधु गए और भद्रबाहु स्वामी से पूछा--'महामुने! आप ही फरमाइए कि जो संघ की आज्ञा का अतिक्रमण करता है, उसे क्या दंड आता है? भद्रबाहु स्वामी ने कहा--संघ की आज्ञा लोपने पर तो संघ से बहिष्कार हो सकता है। संघ मुझे बहिष्कृत न करे, इसलिए मेधावी मुनियों को यहां भेजो। मैं प्रतिदिन सात प्रतिपृच्छाएं वाचनाएं दूंगा।' वे दोनों मुनि पुनः संघ के पास गए। उन्होंने भद्रबाहु स्वामी की स्वीकृति और नेपाल में ही वाचना देने की बात संघ के सम्मुख रखी तो संघ ने स्थूलिभद्र आदि पांच सौ मेधावी मुनियों को वाचना लेने के लिए भद्रबाहु स्वामी के पास भेजा। वाचना प्रारम्भ हुई, किन्तु सब मुनि एक, दो, तीन महीनों में पाटलिपुत्र लौट गए। उन्होंने कहा--'हम प्रतिपृच्छक से पढ़ नहीं सकते।' केवल स्थूलभद्र दृढ़ता से अध्ययन में संलग्न रहे।

महाप्राण ध्यान की साधना थोड़ी शेष रही, तब भद्रबाहु स्वामी ने स्थूलभद्र से पूछा--'तुम खिन्न तो नहीं हो रहे हो।' स्थूलभद्र बोले--'मैं खिन्न नहीं हो रहा हूं।' तब भद्रबाहु ने कहा--'कुछ दिन प्रतीक्षा करो, फिर मैं तुम्हें पूरे दिन वाचना दूंगा।' स्थूलभद्र ने पूछा--'मैंने कितना पढ़ा है, कितना शेष रहा है?' भद्रबाहु बोले--'तुमने अभी ८८ सूत्र ही पढ़े हैं। सरसों जितना पढ़े हो, मंदार पर्वत जितना पढ़ना शेष है, किंतु विषाद मत करो। जितना समय लगा है, उससे कम समय में तुम पढ़ लोगे।'

महाप्राण ध्यान संपन्न हो गया। स्थूलभद्र ने प्रतिपूर्ण नौ पूर्व पढ़ लिए। दो वस्तुओं (विभागों) से न्यून दसवां पूर्व भी पढ़ लिया। भद्रबाहु और स्थूलभद्र नेपाल से प्रस्थान कर पाटलिपुत्र आ गए। स्थूलभद्र की सात बहिनें प्रव्रजित हुई थीं। वे आचार्य भद्रबाहु और अपने भाई स्थूलभद्र को वंदन करने गईं। आचार्य भद्रबाहु उद्यान में ठहरे हुए थे। उन्होंने वंदन कर पूछा--'भंते! हमारा ज्येष्ठ भ्राता कहां है?' भद्रबाहु ने कहा--'इसी देवकुल में परावर्तन-स्वाध्याय कर रहा है।' बहिनें स्थूलभद्र को वंदना करने गईं। स्थूलभद्र ने आती हुई बहिनों को देखा तो उन्होंने अपनी ऋद्धि का प्रदर्शन करने के लिए सिंह का रूप बना लिया। साध्वियों ने सिंह को

देखा। वे डरकर लौट आईं और भद्रबाहु से बोलीं--'स्थूलभद्र को सिंह खा गया।' भद्रबाहु बोले--'वह सिंह नहीं, स्थूलभद्र है।'

दूसरे दिन वाचना के समय स्थूलभद्र भद्रबाहु के सामने उपस्थित हुए। भद्रबाहु ने वाचना नहीं दी। स्थूलभद्र ने सोचा, क्या कारण है जिससे मुझे वाचना के योग्य नहीं माना। उन्होंने इस पर ध्यान केन्द्रित किया और जाना कि इसका कारण कल की घटना है। वे बोले--'मैं भविष्य में ऐसा नहीं करूंगा।' भद्रबाहु बोले--'तुम नहीं करोगे, पर दूसरे कर लेंगे।' बहुत प्रार्थना करने पर बड़ी कठिनाई से वाचना देना स्वीकार किया और कहा--'अवशिष्ट चार पूर्व तुम पढ़ो, पर दूसरों को उनकी वाचना नहीं दोगे।'

स्थूलभद्र के बाद अंतिम चार पूर्व विच्छिन्न हो गए। दसवें पूर्व के अंतिम दो वस्तु भी विच्छिन्न हो गए। दस पूर्व की परम्परा उनके बाद भी चली। हम आगम और अन्य ग्रंथों में जितना ज्ञान उपलब्ध है, उसका अपनी प्रज्ञा से आलोड़न-विलोड़न करते रहें।'

पूज्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् मुनिपत के व्याख्यान का वाचन किया।

## द्विदिवसीय प्रेक्षा अधिवेशन का समायोजन

परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में जैन विश्व भारती के प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा आयोजित द्विदिवसीय प्रेक्षा अधिवेशन आज परिसम्पन्न हुआ। इस संदर्भ में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'प्रेक्षा अधिवेशन का क्रम चल रहा है। प्रेक्षाध्यान से जुड़े हुए लोग आगे भी साधना में आगे बढ़ते रहें तथा औरों को भी उस दिशा में बढ़ाने का प्रयास करते रहें।'

वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री राजेन्द्र मोदी ने प्रेक्षा अधिवेशन के संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति देते हुए प्रेक्षाध्यान की गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की।

जैन विश्व भारती के प्रेक्षा फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में आयोजित द्विदिवसीय प्रेक्षा अधिवेशन में विभिन्न क्षेत्रों से समागत प्रेक्षा प्रशिक्षक, प्रेक्षावाहिनी के संवाहक तथा कार्यकर्तागण संभागी बने। संभागियों को परम पूज्य आचार्यप्रवर से पावन पाथेय प्राप्त हुआ। अन्य सत्र में जैन विश्व भारती के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कीर्तिकुमारजी का वक्तव्य हुआ। अधिवेशन के दौरान प्रेक्षा फाउण्डेशन के चेयरमेन श्री अरविन्द संचेती, अध्यात्म साधना केन्द्र दिल्ली के डायरेक्टर श्री के.सी. जैन, प्रेक्षाध्यान के संपादक श्री लूणकरण छाजेड़, मीडिया व्यवस्थापक श्री अमित जैन आदि के वक्तव्य हुए।

## जीवन, मन और तन में रहे तेजस्विता और शीतलता का संतुलन

**३१ अगस्त।** परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'आकाश अनंत है। आकाश का कोई ओर-छोर नहीं होता। उस आकाश के दो भाग हैं--लोकाकाश व अलोकाकाश। चारों ओर अलोकाकाश के बीच में लोकाकाश मानों टापू जैसा है। लोक में छह द्रव्य हैं, जबकि अलोक में केवल आकाश है। सभी संसारी व सिद्ध जीव लोकाकाश में ही सन्निहित हैं।

हमारी सृष्टि में मनुष्यों की तुलना में देवता बहुत ज्यादा हैं। ज्योतिषक देव के पांच प्रकार होते हैं--सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र और तारा। आकाश मानों इनसे शोभायमान हो रहा है। इनसे लोकपुरुष शोभित होता है। ज्योतिष्क देव भी चार प्रकार के देव निकायों में एक है। सूर्य एक ऐसा तत्त्व है, जिसमें ऊष्मा है, तेजस्विता है और जो प्रकाशकर है। आदमी के जीवन में भी तेजस्विता और प्रकाश अवतरित होना चाहिए। जीवन में तेज का महत्त्व होता है। आदमी छोटा है या बड़ा, यह गौण बात है। उसमें शक्ति, बुद्धि और ज्ञान

कितना है, यह विशेष बात है।

सूर्य और चंद्रमा--ये दोनों सृष्टि में महत्त्वपूर्ण हैं। मानों दिन में सूर्य का साम्राज्य और रात में चंद्रमा का साम्राज्य होता है। दोनों का अपना-अपना क्रम है। जब कुमारश्रमण केशी और गौतम स्वामी की चर्चा का प्रसंग बना, संवाद हुआ, उस संदर्भ में शास्त्रकार ने कहा कि दोनों शोभायमान हो रहे हैं, एक सूर्य के समान हैं तो दूसरे चंद्रमा के समान।

सूर्य और चंद्रमा तेजस्विता और शीतलता के प्रतीक हैं। जीवन में कोरी शीतलता भी हो तो भी एक कमी की बात हो सकती है तो कोरी तेजस्विता भी अधूरेपन की बात हो सकती है। पेट में अग्नि मान्द्य रहे तो पाचनक्रिया में दिक्कत हो सकती है। पेट में ज्यादा गर्मी होने से भी तकलीफ हो सकती है। सूर्य जैसी तेजस्विता और चंद्रमा जैसी शीतलता--इन दोनों का यथायोग्य संतुलन हमारे मन में, हमारे शरीर में और हमारे जीवन में रहे तो संभवतः जीवन का क्रम ठीक रह सकता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् मुनिपत के आख्यान का वाचन किया।

श्री बादल मेहता ने पूज्यप्रवर से ३१ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। श्रीमती मुस्कान बोथरा की नवीन सीडी 'आस्था के धाम' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गई। जयपुर से समागत श्री नरेश मेहता ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

## श्री निर्मल कोटेचा (गुवाहाटी) तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष निर्वाचित

आज रात्रि में आयोजित तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की वार्षिक साधारण सभा में आगामी कार्यकाल के लिए श्री निर्मल कोटेचा (गुवाहाटी) को टी.पी.एफ. के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किया गया।

इस साधारण सभा में अन्य निर्वाचित व्यक्तियों के पद और नाम इस प्रकार हैं-- चीफ ट्रस्टी-निर्मल कुमार चोरड़िया (सूरत), ट्रस्टी-श्री एम.सी. बरलोटा (बेंगलुरु), श्री मन्नालाल बैद (दिल्ली), श्री एस.के. सिंघी (कोलकाता), श्री राजेश भूतोड़िया (कोलकाता), श्री निर्मल मालू (जयपुर), श्री एम.जी. बोहरा (चेन्नई), श्री सुशील कुमार जैन (दिल्ली), आरबिट्रेटर--श्री विजय कोठारी (अहमदाबाद), श्री निर्मल कुमार संचेती (बेंगलुरु) तथा हरीशकुमार आंचलिया (दिल्ली)। निर्वाचन संबंधी प्रक्रिया का संचालन चुनाव अधिकारी की अनुपस्थिति में अतिरिक्त चुनाव अधिकारी श्री प्रकाश बैद (कोलकाता) तथा श्री सलिल लोढ़ा (मुम्बई) ने किया। निर्वाचन के उपरान्त नवनिर्वाचित अध्यक्ष, चीफ ट्रस्टी, ट्रस्टीगण, आरबिट्रेटर्स तथा निवर्तमान अध्यक्ष श्री प्रकाश मालू ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त करते हुए श्रीमुख से मंगलपाठ का श्रवण किया।

## पुरुषार्थ है सबसे बड़ा देवता

**१ सितम्बर।** परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित पावन प्रवचन में कहा--'नक्षत्रों की अपनी दुनिया है। कुछ चीजें ऐसी हैं, जो हमें आंखों से दिखाई देती हैं। बहुत चीजें ऐसी भी हैं जो दूरी आदि के कारण दिखाई नहीं देती। सिद्धशिला, अनुत्तर विमान, नव गैवेयक आदि देवों के आवास स्थान हमारे लिए दृष्टि अगोचर हैं। तिर्यक्लोक की भी कितनी-कितनी चीजें हमारे लिए दृष्टि अगम्य हैं।

ज्योतिर्विज्ञान अपने आप में एक बड़ा विषय है। हस्तरेखा, कुंडली आदि के द्वारा आदमी के भाग्य और भविष्य की जानकारी ली और दी जा सकती है।

एक विषय है भाग्यवाद का तो दूसरा है पुरुषार्थवाद का। बुद्धिमान व्यक्ति को न एकान्त भाग्यवादी

बनना चाहिए और न ही एकान्त पुरुषार्थवादी बनना चाहिए। उससे भाग्य और पुरुषार्थ दोनों में विश्वास करना चाहिए। कविता में भाव और भाषा दोनों सुन्दर हों तो उस कविता का पाठक और श्रोता पर अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। जिस प्रकार कविता में भाव और भाषा दोनों अपेक्षित होते हैं, उसी प्रकार जीवन में भाग्यवाद और पुरुषार्थवाद दोनों अपेक्षित होते हैं।

जैन धर्म में कर्मवाद का वर्णन मिलता है। यह कर्मवाद भाग्यवाद है। फिर भी पुरुषार्थवाद का महत्त्व इसलिए है कि भाग्य का निर्माण पुरुषार्थ के द्वारा ही होता है तथा पुरुषार्थ के द्वारा भाग्य को बदला भी जा सकता है। आदमी को सत्पुरुषार्थ करना चाहिए। उसे भाग्य भरोसे नहीं रहना चाहिए।

आदमी का पुरुषार्थ अच्छा होना चाहिए। उसके लिए आवश्यक है पुरुषार्थ विवेक युक्त और सम्यक् हो। यह संभावना भी की जा सकती है कि आदमी को देवशक्ति से सहयोग मिल सकता है। इसके बावजूद भी मेरा मानना है कि पुरुषार्थ सबसे बड़ा देवता है। जैन दर्शन में देव जगत की भी अवधारणा है और ज्योतिर्विज्ञान की अवधारणा दुनिया में चलती है। सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र और तारा का भी अपना अस्तित्व है। ज्योतिर्विज्ञान, देवजगत, भविष्यवेत्ता की बात आदि से भी ऊपर संभवतः पुरुषार्थ होता है। भाग्य है, पैसा पड़ा है, उसे जाना जा सकता है, किन्तु आदमी के लिए करणीय पुरुषार्थ होता है। पुरुषार्थ से पहले आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि मेरी शक्ति कितनी है? मेरी परिस्थितियां कैसी हैं? और मैं क्या पुरुषार्थ किस रूप में करूं? पुरुषार्थ आदमी का एक बंधु होता है। विवेकपूर्ण सत्पुरुषार्थ आदमी को आगे बढ़ाने वाला हो सकता है।'

परमाराध्य पूज्यप्रवर ने अपने आगमाधारित पावन प्रवचन के पश्चात् 'मुनिपत-आख्यान' के वाचन क्रम को आगे बढ़ाया।

## तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का ११वां सम्मेलन समायोजित

आज से परमाराध्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम का द्विदिवसीय ११वां राष्ट्रीय सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। इस संदर्भ में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने कहा--'आज तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अधिवेशन का भी प्रसंग है। जहां संस्था होती है, संगठन होता है, वहां व्यवस्था की आवश्यकता होती है। संगठन साधुओं का हो या गृहस्थों का, उसे कार्यकारी बनाए रखने के लिए व्यवस्था अपेक्षित होती है। जिस संगठन में कोई नेतृत्व नहीं होता है तो वह धीरे-धीरे विनाश की ओर जा सकता है। संगठन को स्वस्थ रखने के लिए कभी-कभी कठोर निर्णय भी लेने पड़ सकते हैं, कभी-कभी शल्यक्रिया करनी पड़ सकती है तो कहीं-कहीं प्रोत्साहन देना भी अपेक्षित हो सकता है।

संगठन में 'मैन पॉवर' अर्थात् कार्यकर्ता शक्ति अच्छी रहनी चाहिए। उसके सदस्यों में स्वार्थ हावी नहीं होना चाहिए। जिस संगठन में व्यक्तिगत स्वार्थ हावी हो जाता है, उससे अच्छी सेवा होना मुश्किल हो सकता है। किसी संगठन या संस्था के प्रधान का यह चिन्तन रहना चाहिए कि संगठन/संस्था के लिए तो मैं प्रधान हूं, पर मेरे लिए संस्था प्रधान है। जिस संगठन में नेतृत्वकर्ता व्यक्ति संगठन को प्रधान मानकर कार्य करता है, वह संगठन अच्छा कार्य कर सकता है।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम मानों बुद्धिमानों की एक संस्था है। जिन्होंने सारस्वत साधना की है, जो वर्षों तक पढ़े-लिखे हैं, योग्यता अर्जित की है, जिनके पास दिमागी शक्ति है, मानों ऐसे व्यक्तियों का समूह तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम है। हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ धर्मशासन मिला है। आचार्य भिक्षु हमारे प्रथम गुरु हुए। उसी परंपरा में आचार्य तुलसी जैसे एक स्फुरणा वाले, युगीन चिंतन को महत्त्व देने वाले आचार्य हुए।

मुझे स्मरण है दिल्ली में गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में बुद्धिजीवियों का एक सम्मेलन हुआ था। उस समय मैं भी दिल्ली में गुरुदेव की सेवा में था। वह बुद्धिजीवियों का सम्मेलन किसी रूप में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की पृष्ठभूमि कहा जा सकता है, गर्भकाल की स्थिति कहा जा सकता है। परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के समय में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम उद्‌भव की स्थिति में आगे बढ़ा और हमारे धर्मसंघ में एक अच्छी संस्था के रूप में स्थापित हो गया।

धर्मसंघ के साथ जुड़ने से बुद्धिजीवियों की बुद्धि को और ज्यादा अच्छे मार्ग पर चलने का मौका मिल सकता है। धर्मसंघ की छत्रछाया के बिना बुद्धि गलत मार्ग पर भी जा सकती है। इस प्रकार बुद्धिजीवियों की बुद्धि को सही रास्ते पर गतिमान रखने का एक माध्यम प्रोफेशनल फोरम है। मानों यह ऐसा राजमार्ग है, जिस पर चलने से बुद्धिजीवियों की बुद्धि अच्छे रूप में आगे बढ़ सकती है। इस संस्था में युवावस्था के लोग भी हैं तो प्रौढ़ और वृद्ध अवस्था के लोग भी हैं। अच्छे विनीत, कार्य करने वाले व्यक्ति भी हैं। इस फोरम में विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने वाले व्यक्ति जुड़े हुए हैं। भले न्याय के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोग हों और भले चिकित्सा के क्षेत्र में, विभिन्न क्षेत्रों की बुद्धियां इस फोरम में समाहित हैं। बिखरे फूलों का अपना महत्त्व हो सकता है, किन्तु उनकी माला बना दी जाती है तो उससे किसी अतिथि का सम्मान भी किया जा सकता है। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम मानों बुद्धिजीवि रूपी सुमनों की माला है, उसके साथ धर्म रूपी कल्पतरु की छाया है, जो बुद्धि के साथ शुद्धि को बनाए रखने में सहायक बन सकती है। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्य खूब अच्छा कार्य करते रहें तथा आध्यात्मिक विकास करते रहें।

नेतृत्व परिवर्तन दुनिया का सामान्य नियम है। व्यक्ति स्थायी नहीं, संस्थान चिरस्थायी हो सकता है। व्यक्ति तो आता है और चला जाता है। कोई एक व्यक्ति अध्यक्ष बनता है और समय आने पर उसके स्थान पर दूसरा व्यक्ति उस संस्थान को संभाल लेता है। कोई अध्यक्ष रहे या न रहे, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के साथ आध्यात्मिक संदर्भों में उसका संबंध बना रहे। इस फोरम का नया नेतृत्व खूब अच्छा आध्यात्मिक कार्य करे, शुभाशंसा।'

'टीपीएफ गौरव' एक सम्मानपूर्ण अलंकरण है। इसे प्राप्त करने वाले इस गौरव की गरिमा को बनाए भी रखें और उसे आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहें तो कल्याणकारी बात हो सकती है।'

इस अवसर पर मुख्यमुनिश्री ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'वर्तमान युग मैनेजमेंट का है। सफलता के लिए मैनेजमेंट की चार बाते हैं--ऑपोर्चुनिटि, नॉलेज, डेडिकेशन और इंप्लिमेंटेशन। भगवान महावीर मैनेजमेंट के महान गुरु थे। उन्होंने परम सफलता के लिए चार बातें बताईं--मनुष्यत्व, धर्मश्रुति, श्रद्धा और संयम में पराक्रम। वर्तमान युग के मैनेजमेंट के सूत्र भगवान महावीर के इन चारों सूत्रों के पर्याय माने जा सकते हैं। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सदस्य इस माने में सौभाग्यशाली हैं कि उन्हें मनुष्यत्व, धर्मश्रुति, धर्मश्रद्धा सहज रूप में प्राप्त हैं, किन्तु जब तक वे संयम में पराक्रम नहीं करेंगे, तब तक उनके सौभाग्य में कुछ कमी रह सकती है। आचार्यश्री महाश्रमणजी भी मैनेजमेंट के महान गुरु हैं। तेरापंथ समाज से जुड़े हुए प्रोफेशनल्स के जीवन में जैनत्व मुखर रहे। देव, गुरु और धर्म के प्रति उनकी श्रद्धा पुष्ट रहे। वे प्रतिदिन कुछ समय अपनी आत्मा तथा धर्मसंघ की सेवा में नियोजित करते रहें तो उनका सौभाग्य और भी वृद्धिंगत हो सकता है।'

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि रजनीशकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। टीपीएफ के निवर्तमान अध्यक्ष श्री प्रकाश मालू ने अपने कार्यकाल की उपलब्धियों को प्रस्तुत करते हुए पूज्यचरणों में कृतज्ञता अर्पित की तथा विलासपुर न्यायालय के न्यायाधीश श्री गौतम चोरड़िया (राजनांदगांव) को टी.पी.एफ. गौरव २०१८ को प्रदान किए जाने की घोषणा की। कार्यक्रम में नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री निर्मल

कोटेचा ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त करते हुए अपनी टीम की घोषणा की। उनके द्वारा मनोनीत पदाधिकारियों के नाम इस प्रकार हैं-- उपाध्यक्ष-श्री नवीन पारख (सिलीगुड़ी), श्री कैलाश झाबक (सूरत), श्री मनोज पटावरी (दिल्ली), श्री नवीन सुराणा (हैदराबाद), श्री नवीन चोरड़िया (राजसमंद), श्रीमती राजलक्ष्मी गोलच्छा (विराटनगर), महामंत्री-श्री सुशील चोरड़िया (कोलकाता), कोषाध्यक्ष-श्री विमल शाह (अहमदाबाद), सहमंत्री श्री मनोज नाहटा (गुवाहाटी), श्री मनीष कोठारी (मुम्बई), श्री दिनेश धोका (चेन्नई), श्री हिम्मत मांडोत (बेंगलुरु)

निवर्तमान अध्यक्ष ने नवनिर्वाचित एवं नव मनोनीत पदाधिकारियों आदि को शपथ ग्रहण करवाते हुए नव निर्वाचित अध्यक्ष को अध्यक्षीय दायित्व सौंपा।

इस अवसर पर परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मंगलपाठ सुनाकर सबको मंगल आशीष प्रदान करते हुए कहा--'सभी पदाधिकारी और जिन्हें जो दायित्व मिला है, वे अपने दायित्व की गरिमा को बनाए रखते हुए अच्छा आध्यात्मिक कार्य करते रहें।'

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के द्विदिवसीय सम्मेलन में ३५ क्षेत्रों के ३५४ प्रोफेशनल संभागी बने। 'हम कितने सौभागी' थीम पर आधारित इस सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि सुधाकरजी तथा समणी संबोधप्रज्ञाजी ने संभागियों को प्रशिक्षण दिया। लिंकेडिन के सी.ई.ओ. श्री अक्षय कोठारी का भी विशेष रूप से वक्तव्य हुआ। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री निर्मल कोटेचा, निवर्तमान अध्यक्ष श्री प्रकाश मालू, पूर्व महामंत्री श्री नवीन पारख, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बलवंत चोरड़िया, श्री कमलेश नाहर, सम्मेलन के संयोजक श्री राकेश खटेड़, टी.पी.एफ.-चेन्नई के अध्यक्ष श्री दिनेश धोका, मंत्री श्री कमल कटारिया, श्री के.सी. जैन, श्री पन्नालाल टांटिया, श्री एम.जी. बोहरा, सुश्री याशिका खटेड़ आदि ने भी अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित केरल से राज्यसभा सांसद श्री टी.के. रंगराजन ने कहा--'मैं राष्ट्रसंत आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में उपस्थित होकर स्वयं को बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे इतने महान संत के दर्शन करने का अवसर प्राप्त हुआ। आचार्यश्री के सादगीपूर्ण जीवन और मंगल विचारों से मैं बहुत प्रभावित हूं। जैन समाज के लोग बहुत अच्छे हैं और यहां महिलाओं के जीवन का स्तर ऊंचा है।'

## टी.पी.एफ. गौरव अलंकरण प्रदान समारोह

कार्यक्रम में तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम द्वारा सन् २०१६ का टी.पी.एफ. गौरव अलंकरण श्री नरेन्द्र दूगड़ तथा सन् २०१७ का अलंकरण श्री के.सी. जैन को प्रदान किया गया। इस संदर्भ में डॉ. कमलेश नाहर ने प्रशस्ति पत्र का वाचन किया। अलंकरण प्राप्तकर्ता द्वय व्यक्तियों ने अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए।

## नींव को सिंचन देने वाला उपक्रम है ज्ञानशाला

**२ सितम्बर।** भाद्रपद माह का प्रथम रविवार। ज्ञानशाला दिवस का समायोजन। प्रातः चेन्नई ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी और प्रशिक्षक कार्यकर्ताओं ने रैली के रूप में पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीष प्रदान की।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जगत में ज्योतिष्कीय विभाग के अंतर्गत सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र और तारा की व्यवस्था है। मनुष्य व अन्य प्राणियों के जीवन के साथ भी इस ज्योतिष्कीय विभाग का कुछ संबंध है। सूर्य का प्रकाश

प्राणियों के जीवन के साथ कितना संपृक्त है। सूर्य के प्रकाश से पदार्थ और प्राणी आलोकित हो जाते हैं। घूमना-फिरना, खाना आदि क्रियाएं भी सुविधापूर्ण हो सकती हैं। सूर्य की अनुपस्थिति में विद्युत, दीपक आदि के प्रकाश से काम चलाने का प्रयत्न किया जाता है।

ज्ञानशाला दिवस के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'बालावस्था निर्माण का समय होता है, अध्ययन का समय होता है और कुछ अर्जन करने का समय होता है। बच्चे विद्यालय में जाकर विद्या अर्जन करने का प्रयास करते हैं। वहां बच्चों को संस्कार भी प्राप्त हो सकते हैं। माता-पिता आदि अभिभावक भी बच्चों के विकास की दृष्टि से ध्यान देते हैं। अच्छी शिक्षा के साथ बच्चों में अच्छे संस्कार भी आ सकें, इसके प्रति ध्यान दिया जाता होगा, और अधिक ध्यान देना भी चाहिए।

हमारे यहां जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज में ज्ञानशालाएं चलती हैं। यह एक सुन्दर उपक्रम है। ज्ञानशाला एक निर्माणशाला है, एक संस्कारशाला है, धर्म की एक पाठशाला है। कितने-कितने बच्चे ज्ञानार्थी के रूप में ज्ञानशाला से जुड़े हुए हैं। समाज के लिए यह आवश्यक होता है कि उसके बच्चों में सत्संस्कारों का सृजन हो और उनमें धार्मिक ज्ञान भी पुष्ट हों। ज्ञानशाला के माध्यम से कितने-कितने प्रशिक्षण देने वाले व्यक्ति मानों स्वयं को सेवाकार्य से जोड़े हुए हैं। एक ओर जहां प्रशिक्षण कार्य होता है तो दूसरी ओर ज्ञानशाला का व्यवस्थापक्ष भी होता है। दोनों का योग है। व्यवस्था के अभाव में प्रशिक्षण कार्य बाधित हो सकता है और प्रशिक्षण के बिना कोरी व्यवस्था किस काम की रह जाती है। ज्ञानशाला में प्रशिक्षण कार्य हो, अपेक्षानुसार व्यवस्थापक्ष भी हो और ज्ञान प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थी भी हों तो ज्ञानशाला का त्रिआयामी सुन्दर रूप बन सकता है। खीर बनाई जाती है। खीर में दूध, चावल और चीनी--तीनों चीजें चाहिए। तीनों का संतुलित योग होने पर खीर खाने योग्य बन सकती है। जैसे खीर के लिए दूध, चावल और चीनी--तीनों चीजें चाहिए, इसी प्रकार ज्ञानशाला के लिए प्रशिक्षण, व्यवस्था और ज्ञानार्थी तीनों आवश्यक हैं। ये तीनों होते हैं तो ज्ञानशाला अपने आप में पूर्णता को प्राप्त हो सकती है।

ज्ञानशाला एक बड़ा सेवा का कार्य है। इसके अंतर्गत अच्छे बच्चों के निर्माण पर ध्यान दिया जा रहा है। जिस समाज के बच्चे अच्छे होते हैं, आशा की जा सकती है कि उसका भविष्य अच्छा हो सकता है। बच्चों की फुलवारी अच्छी रहे तो समाज के कल्याण की बात हो सकती है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ में ज्ञानशाला मानों नींव के सिंचन का प्रयास है। बच्चे भले सप्ताह में एक दिन ही ज्ञानशाला में जाते हैं, किन्तु एक दिन की खुराक भी बहुत महत्त्वपूर्ण हो सकती है, बहुत संपोषक सिद्ध हो सकती है।

यदा-कदा ज्ञानार्थियों के द्वारा कार्यक्रमों में प्रस्तुतियां दी जाती हैं। उनसे भी अनुमानित होता है कि बच्चों पर श्रम किया जा रहा है, तैयारी करवाई जा रही है और उन पर समय नियोजित किया जा रहा है। निःस्वार्थ भाव से सेवा देने का क्रम बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। प्रशिक्षण देने वाले यदि सम्यक् ढंग से प्रशिक्षण देते हैं तो वे निर्जरा के लाभ से लाभान्वित हो सकते हैं। प्रशिक्षण देने वालों को भी प्रशिक्षण देने का क्रम चलता है, यह भी महत्त्वपूर्ण बात है। यह क्रम चलता रहे तो प्रशिक्षण देने वाले भी योग्यता सम्पन्न बन सकते हैं। योग्य शिक्षक योग्य शिक्षण दे सकता है।

देव, गुरु, धर्म, नव तत्त्व, पच्चीस बोल, तत्त्वचर्चा आदि चीजें ज्ञानशाला के पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों को कंठस्थ हो जाए। प्रतिभाशाली बच्चे उन्हें ग्रहण कर लें तथा साथ में संस्कार निर्माण का क्रम चलता रहे तो ज्ञानार्थियों का जीवन आलोकमय और सौरभमय हो सकता है।

ज्ञानशाला दिवस ज्ञानशाला के विकास की बात पर ध्यान देने का एक निमित्त बन जाता है। ज्ञानशाला के बारे में कुछ जानकारी ज्ञानशाला दिवस के माध्यम से दी जा सकती है। जहां ज्ञानशाला नहीं चल रही है और वहां यदि ज्ञानशाला शुरू हो सकती है तो उस पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। जहां पहले

से ज्ञानशाला चल रही है, वहां ज्ञानार्थियों की संख्या वृद्धि की संभावना पर ध्यान देकर उस दिशा में प्रयत्न करना चाहिए।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में ओर तेरापंथी सभाओं के स्थानीय तत्त्वावधान में ज्ञानशाला का यह पौधा विकसित होता रहे, उसे उचित छत्रछाया मिलती रहे और प्रेरणा जल का सिंचन मिलता रहे तो यह पौधा और ज्यादा विकसित हो सकता है। ज्ञानशाला हमारे धर्मसंघ का एक महत्त्वपूर्ण उपक्रम है। यह उपक्रम सुरक्षित रहे और अधिक विकसित भी होता रहे, यह अभिलषणीय है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् मुनिपत के आख्यान का वाचन किया।

तेरापंथी सभा-चेन्नई के अंतर्गत ज्ञानशाला संयोजक श्री सुरेश बोहरा ने ज्ञानशाला दिवस के संदर्भ में अपनी अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला चेन्नई के ज्ञानार्थियों ने अपनी प्रस्तुति दी तथा 'पावन यह ज्ञानशाला' गीत का सामूहिक रूप में संगान किया गया।

तमिलनाडु पाठ्य पुस्तक समिति की अध्यक्ष एवं तमिलनाडु सरकार की पूर्व मंत्री श्रीमती पी. वलरमाथि, ए.आई.डी.एम.के. के राज्य प्रचार सचिव श्री गोविन्दन, नगर निगम तिरुवन्नमलाई के श्री सुनील कुमार, तमिलनाडु व्यापारी संगठन के अध्यक्ष श्री विक्रमराजा, ट्रेडर्स एसोसिएशन-तिरुवन्नामलाई के अध्यक्ष श्री मानूलिंगम, हिंदू मक्कल-काची के संस्थापक अध्यक्ष श्री अर्जुन सत्पथजी आदि ने आज पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

## निष्पक्ष है कर्मों का न्यायालय

**३ सितम्बर।** परमश्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'भगवान महावीर का जीवनवृत्त संक्षिप्त में आयारो और आयारचूला में प्राप्त होता है। उनके पांच कल्याणक हस्तोत्तर नक्षत्र में हुए। हस्तोत्तर नक्षत्र को उत्तर फाल्गुनी भी कहा जाता है। भगवान महावीर की आत्मा जब देवगति से च्युत हुई, उस समय उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र था। देवताओं का आयुष्य भी कभी न कभी पूर्ण होता है। भगवान महावीर जब देवानंदा ब्राह्मणी की गर्भ में स्थित थे, तब देव द्वारा उनका संहरण कर उन्हें क्षत्रियाणि त्रिशला के गर्भ में अवस्थित किया गया, उस समय भी उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र था। प्रभु महावीर का जन्म भी उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में ही हुआ। उन्होंने मुनि दीक्षा स्वीकार की, तब भी उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र था। उन्हें केवलज्ञान भी उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र में ही प्राप्त हुआ। मानों कि उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र भी धन्य हो गया कि एक परम पुरुष के जीवन के पांच प्रसंग उस नक्षत्र के साथ जुड़ गए।

भगवान महावीर ने साधना में कितना पराक्रम और पुरुषार्थ किया। उनके साधनाकाल में देवकृत, मनुष्यकृत, तिर्यंचकृत उपसर्ग पैदा हुए। उन्होंने किस प्रकार उन उपसर्गों और कष्टों को सहन किया। सामान्य आदमी के लिए इस प्रकार कष्टों को सहना कठिन हो सकता है। आज भगवान महावीर हमारे लिए प्रणम्य पुरुष बने हुए हैं। ऐसी परम आत्माओं का स्मरण और स्तवन करने से, उनके जीवनवृत्त को पढ़ने से भी एक प्रेरणा प्राप्त हो सकती है।

आयारो के नवें अध्ययन में श्लोकों के माध्यम से भगवान महावीर के जीवनवृत्त को संक्षेप में उजागर किया गया है। आयारो के पहले आठ अध्ययनों में सातवां अध्ययन लुप्त है। शेष सात अध्ययनों में जो दर्शन दिया गया है, वह दर्शन भगवान के जीवन में चरितार्थ होता हुआ भी अच्छी तरह देखा जा सकता है, अर्थात् जैसा उनका दर्शन था, वैसा उनका जीवन था। भगवान महावीर की आत्मा ने भी अनंत-अनंत जन्म प्राप्त किए। उनके अतीत के अनन्तर सत्ताईस भवों का वर्णन मिलता है। उनकी आत्मा उन भवों में सातवीं नरक तक भी गई। वे उन भवों में चक्रवर्ती भी बने, वासुदेव भी बने। कितने जन्मों में उन्होंने साधना का जीवन

जीया। वे देवगति में भी गए।

कर्मवाद का सिद्धांत इतना निष्पक्ष है कि तीर्थंकर बनने वाली आत्मा ने भी यदि पाप कर्म किए हैं तो उन कर्मों के फल उस आत्मा को कभी भोगने होते हैं। मानों कर्मवाद का न्यायालय इतना निष्पक्ष है कि बड़े से बड़ा व्यक्ति भी क्यों न हो, उसे दया नहीं मिलती और निर्दोष को दंड नहीं मिलता। वकील की दलीलों के आधार पर सांसारिक न्यायालय से कोई बच भी सकता है, किन्तु कर्म के न्यायालय में कोई भी दोषी बच नहीं सकता और निर्दोष को दंड नहीं मिल सकता।'

आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् 'मुनिपत के व्याख्यान' का वाचन भी किया।

## गंभीरता और उच्चता का योग हो जीवन में

**४ सितम्बर।** परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित अपने पावन प्रवचन में कहा--'जैन वाङ्मय में भूगोल की बात प्राप्त होती है और खगोल की भी बात प्राप्त होती है। हमारा यह जो तिर्यक्लोक है, उस विषय में भी अच्छी जानकारी जैन ग्रंथों में मिलती है। दुनिया में एक क्षेत्र का नाम है--मनुष्य क्षेत्र। मनुष्य क्षेत्र में ढाई द्वीप समाविष्ट हैं। रचना इस प्रकार है कि हम जिस द्वीप में हैं, उसका नाम है जम्बूद्वीप। उसके चारों ओर वलयाकार में लवण समुद्र है। उसके बाद फिर एक द्वीप आता है उसका नाम है धातकी खण्ड। उसके बाद कालोदधि समुद्र है। फिर पुष्कर द्वीप है। यों द्वीप-समुद्रों का एक क्रम चलता है, किन्तु सारे द्वीप समुद्रों में मनुष्य नहीं होते हैं। मनुष्य जम्बूद्वीप, धातकी खण्ड और पुष्कर द्वीप के आधे भाग में ही पैदा होते हैं। यह ढाई द्वीप मनुष्य क्षेत्र है। मनुष्य क्षेत्र के मध्य में दो समुद्र हैं--लवण और कालोदधि। ढाई द्वीप में पन्द्रह कर्मभूमियां हैं--पांच भरत, पांच ऐरावत और पांच महाविदेह। इन पन्द्रह कर्मभूमियों में मनुष्य पैदा होते हैं और इन्हीं में तीर्थंकर होते हैं।

समुद्र के माध्यम से उक्कित्तणं (लोगस्स) में कहा गया है--'सागरवर गंभीरा सिद्धा-सिद्धिं मम दिसंतु' सागर के समान गंभीर सिद्ध भगवान मुझे सिद्धि प्रदान करें। पहाड़ में उच्चत्व होता है, किन्तु गांभीर्य नहीं होता। समुद्र में गंभीरता होती है, किन्तु उसमें उच्चता नहीं होती। मनस्वी ज्ञानी व्यक्ति में गंभीरता और उच्चता दोनों हो सकती हैं। आदमी के जीवन में ज्ञान का गांभीर्य रहे और आचरण की उच्चता भी रहे।

संसार को समुद्र, शरीर को नौका और जीव को नाविक कहा गया है। शरीर रूपी नौका में स्थित होकर संसार समुद्र को पार किया जा सकता है। आदमी को अपना शरीर धार्मिक साधना में नियोजित करना चाहिए। जब तक बुढ़ापा पीड़ित न करे, जब तक व्याधियां न बढ़ें और जब तक इन्द्रिय शक्ति क्षीण न हो जाए, तब तक पुरुषार्थ रूपी धर्म कर लेना चाहिए।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुनिपत आख्यान शृंखला के क्रम को आगे बढ़ाया।

## धर्म से प्रभावित रहे राजनीति

**५ सितम्बर।** परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान 'ठाणं' आगमाधारित प्रवचन शृंखला के अंतर्गत कहा--'शास्त्र में बताया गया है कि बारह में से दो चक्रवर्ती ऐसे हुए हैं, जिन्होंने काम-भोगों का त्याग नहीं किया और वे मृत्यु को प्राप्त कर सातवीं नरक में पैदा हुए। वे दो चक्रवर्ती हैं-सुभूम और ब्रह्मदत्त। चक्रवर्ती सत्ताधीश व्यक्ति होता है। मुझे ऐसा अनुमानित हुआ कि दुनिया में चक्रवर्ती से बड़ा कोई सत्ताधीश नहीं होता। प्रभुत्व के क्षेत्र में सर्वोच्च व्यक्ति चक्रवर्ती होता है। वह छह खण्ड का अधिपति होता है। इस अवसर्पिणि काल में बारह चक्रवर्ती हो चुके हैं। इन बारह में से दो चक्रवर्ती नरक में गए हैं-- आठवां सुभूम और बारहवां ब्रह्मदत्त। एक ओर मनुष्य जन्म में वे इतने बड़े व्यक्ति थे कि भौतिकता की दृष्टि

से इतना बड़ा व्यक्ति मिलना कठिन है तो दूसरी ओर वे मरकर सातवीं नरक में पैदा हुए, जिसे अधमतम गति भी कहा जा सकता है।

बारह में से आठ चक्रवर्ती मृत्यु के बाद मोक्ष में गए हैं। तीन चक्रवर्ती उसी जन्म में तीर्थंकर बने-- सोलहवें तीर्थंकर शांतिनाथ, सत्रहवें तीर्थंकर कुंथुनाथ और अठारहवें तीर्थंकर अरनाथ। प्राप्त उल्लेख के अनुसार दो चक्रवर्ती मृत्यु के बाद देवलोक में उत्पन्न हुए। चक्रवर्ती और तीर्थंकर दोनों ही सर्वोच्च स्थान होते हैं। एक भौतिक समृद्धि की दृष्टि से सर्वोच्च है तो दूसरा अध्यात्म जगत के नेतृत्व की दृष्टि से सर्वोच्च हैं। एक ही जन्म में चक्रवर्ती और तीर्थंकर दोनों बन जाना बहुत महत्त्वपूर्ण बात है।

चक्रवर्ती के शासन में नौ निधियां होती हैं। वे चौदह रत्नों के अधिपति होते हैं। चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ वासुदेव, नौ प्रतिवासुदेव और नौ बलदेव--इस प्रकार कुल तिरेसठ उत्तम पुरुष दुनिया में होते हैं। उन्हें श्लाकापुरुष भी कहा जाता है।

दो चक्रवर्ती जैसे उच्च पदस्थ व्यक्ति मरकर सातवीं नरक में पैदा हुए। इस बात से प्रेरणा यह लेनी चाहिए कि राजनीति में भी धर्म के प्रभाव को बनाए रखें। राजनेता धर्म के मार्ग पर चलता रहे तो उसे नरक में क्यों जाना पड़े, संभव है वह नरक से बच जाए। जहां राजनीति पापाचार, निष्ठुरता, निर्दयता, हिंसा, परिग्रह के प्रति आसक्ति, काम-भोगों के प्रति आसक्ति आदि से संपृक्त हो जाती है तो राजनीति भी दूषित हो जाती है।

दुनिया में राजनीति भी एक आवश्यक तत्त्व होता है। लोकतांत्रिक प्रणाली में भी राजनीति होती है। जहां जनता के द्वारा जनता के लिए जनता का शासन है। वहां मानों सत्ता जनता के हाथ में होती है। जहां राजतंत्र होता है, एक राजा का शासन चलता है। प्रणाली भले लोकतांत्रिक हो या राजतांत्रिक, दोनों का उद्देश्य यह होता है कि प्रजा सुखी रह सके, प्रजा में व्यवस्था अच्छी रह सके। दोनों प्रणालियों की मंजिल एक है कि जनता सुखी रहे और कानून-व्यवस्था अच्छी रहे, ऐसा प्रतीत हो रहा है।

लोकतंत्र में मतदान होता है और एक सामान्य व्यक्ति भी प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हो सकता है। चाय बेचने वाला व्यक्ति या चाय बेचने वाले का बेटा भी प्रधानमंत्री पद तक पहुंच सकता है। इस प्रकार लोकतंत्र में व्यक्ति-व्यक्ति को उच्च पद पर आसीन होने का अधिकार है। जबकि राजतांत्रिक प्रणाली में राजवंश परंपरा चलती है। कभी-कभी वहां भी संभवतः सामान्य व्यक्ति को भी राजा बनने का मौका मिल सकता है। किसी राजा की अचानक मृत्यु हो जाए और पीछे कोई व्यवस्था न हो तो जनता में से किसी सामान्य आदमी को भी हथिनी आदि की व्यवस्था से राजा के रूप में चुना जा सकता है।

लोकतांत्रिक प्रणाली में भी किसी को मुखिया बनाना अपेक्षित होता है और राजतांत्रिक प्रणाली में भी किसी मुखिया की अपेक्षा होती है। जहां कोई मुखिया नहीं होता, वह संगठन गड़बड़ा सकता है। संगठन हो या प्रांत या देश, सब जगह मुखिया की आवश्यकता होती है। मैं तो मुखिया की प्रणाली को आवश्यक मानता हूं। मुखिया धार्मिक संगठन में हो या सामाजिक और राष्ट्रीय संगठन में, वह कार्य किस प्रकार करता है, यह महत्त्वपूर्ण होता है। जो मुखिया अनीतिपूर्ण कार्य करता है, प्रजा को दुःख देता है, कुछ चाटुकारों के वश में होकर कइयों के साथ अन्याय करता है, आसक्तिमान होकर लूटने की चेष्टा करता है, निष्ठुर होता है, वह मरकर नरक में जा सकता है। जहां हिंसा और परिग्रह का प्राधान्य रहता है तो मानना चाहिए कि आगे गति खराब हो सकती है। राजनीति के साथ धर्मनीति और न्यायनीति रहे तो राजनीति शुद्ध रह सकती है।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने आगमाधारित प्रवचन के पश्चात् मुनिपत के आख्यान का वाचन किया।

आज तिरुवन्नामलै स्थित शेषाद्रि मठ के प्रमुख स्वामी श्री मुथूकुमार स्वामी पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। आचार्यप्रवर का उनसे संक्षिप्त वार्तालाप हुआ। तमिलनाडु पुलिस के एडीजी श्री आर. मुगमस्वामी ने भी आज पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

## स्मृति संबल

- बेंगलुरु निवासी श्री छतरसिंहजी छाजेड़ का आकस्मिक दुर्घटना में निधन हो गया। वे एक अच्छे श्रावक कार्यकर्ता थे। परिवार से संबद्ध साध्वी सरलप्रभाजी संघ में साधनारत हैं। बेंगलुरु चतुर्मास में सेवा उपासना करने की भावना मन में रह गई। पूरा परिवार संघ एवं संघपति के प्रति समर्पित परिवार है।
- नागौर निवासी गुवाहाटी प्रवासी राजकुंवर लूणावत (सुपुत्र श्री मूलचन्द लूणावत) का अत्यल्प/अल्पायु में स्वर्गवास हो गया। पिता की गोद में बैठा पिता के साथ नवकार मंत्र का पाठ करने की कोशिश करता था। चेन्नई चतुर्मास में सेवा उपासना के दौरान बीमारी के कारण दो वर्ष की अवस्था से पूर्व ही कालधर्म को प्राप्त हो गया। पिता मूलचन्द गुवाहाटी का कर्मठ एवं सेवा में सजग श्रावक कार्यकर्ता है। गुरु सन्निधि में पुत्र के दिवंगत होने के पश्चात् माता-पिता ने पूर्ण दृढ़धर्मिता निभाते हुए आर्तध्यान को हावी नहीं होने दिया। गुरुदेव ने स्वयं माता आदि को दर्शन दिए जिससे पूरे परिवार को बहुत संबल प्राप्त हुआ। लूणावत परिवार धर्मसंघ के प्रति समर्पित परिवार है।
- बीदासर निवासी एवं चेन्नई प्रवासी सुश्री ऊषा डूंगरवाल (सुपुत्री स्व. श्री मांगीलाल डूंगरवाल) का देहावसान हो गया। प्रतिदिन लगभग ११ सामायिक का नियम अंतिम समय तक निभाया। प्रतिदिन दोनों समय प्रतिक्रमण एवं १०० से अधिक कंठस्थ गीतिकाओं का संगान करती थी। नौ तक की लड़ी, एक मासखमण, सिद्धि तप, भद्रोतरतप, प्रतरतप, आदि तपस्या कर आत्म निर्जरा की। नौ की तपस्या में अनशन स्वीकार कर श्रावक के तीसरे मनोरथ को पूर्ण किया। पूरे डूंगरवाल परिवार में संघ एवं संघपति के प्रति अटूट आस्था है।
- जसोल निवासी श्री मोहनलाल लूंकड़ (सुपुत्र स्व. श्री मुल्तानमलजी लूंकड़) का निधन हो गया। वे सरल प्रकृति के श्रावक थे। समाजसेवा में रुचि रखते थे। उनके परिवार से संबंधित साध्वी प्रसन्नप्रभाजी धर्मसंघ में साधनारत हैं। लूंकड़ परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- गंगाशहर निवासी गुवाहाटी प्रवासी श्रीमती अनीषा चोरड़िया (धर्मपत्नी श्री सौरभ चोरड़िया) का देहावसान हो गया। प्रति सप्ताह १ सामायिक का नियम निभाया। वे मिलनसार एवं सरल स्वभाववाली महिला थीं। गुवाहाटी के आसपास विचरणशील चारित्रात्माओं की सेवा उपासना का लाभ लेती थी। दिव्यांग बच्चों को मुफ्त में कम्प्यूटर क्लास करवाती थी। आकस्मिक हृदयाघात से अल्पायु में ही काल का ग्रास बन गई। गुवाहाटी का चोरड़िया परिवार श्रद्धालु परिवार है।

## 'शासनश्री' मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' का अनशनपूर्वक प्रयाण

**४ सितम्बर।** दिल्ली में प्रवासित 'शासनश्री' मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन' का अनशनपूर्वक प्रयाण हो गया। उनके विषय में पूज्यप्रवर के उद्गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

## विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

**ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध**

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला